इतिहास आज भी जीवित है

डॉ. प्रीति जोशी

आज आधुनिक खेती के ज़माने में जब हम पारम्परिक खेती या सजीव खेती की बात करते हैं जो पूरी तरह रसायन-मुक्त हुआ करती थी और हमारी आत्मनिर्भर कृषि संस्कृति का आधार थी, तब लोग उसे पुराने ज़माने की बात कहते हैं। अक्सर कहा जाता है कि पहले बिना रसायन की खेती हो सकती थी परन्तु आज यह सम्भव नहीं है। आज का पर्यावरण, आज की ज़मीन बिना किसी बाहरी मदद के अच्छा उत्पादन देने में सक्षम नहीं है।

परंतु आज भी हमारे देश में कई जगह कृषि की वही पुरानी आत्मनिर्भर खेती की परम्परा जीवित है जहां किसी भी प्रकार की बाहरी सहायता के बिना किसान अच्छी खेती कर रहे हैं। वे इससे अपना व अपने परिवार का भरण पोषण कर रहे हैं और सुखी व संतुष्ट हैं। ऐसा ही एक क्षेत्र है छत्तीसगढ़ के बस्तर ज़िले का जहां 70 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी है। ये पूरी तरह से कृषि एवं वनों पर निर्भर हैं। प्रस्तुत है इसी क्षेत्र के एक किसान की कहानी:

किसान का नाम : राजूराम नेताम
गांव : चिचपोंलग
पता : पोस्ट: बमनी,
पंचायत: सम्बलपुर,
तहसील: कोण्डागांव

धन धान से भरपूर राजूराम नेताम

कोण्डागांव रायपुर से करीब 230 किलोमीटर की दूरी पर है और चिचपोंलग कोण्डागांव से पांच किलोमीटर की दूरी पर है। राजूराम नेताम परम्परागत किसान हैं। इनके पास बारह एकड़ ज़मीन है। वे मुख्यत: धान की सूखी खेती करते हैं। ये लकड़ी के अच्छे कारीगर भी हैं, साथ ही एक अच्छे वैद्य भी। जड़ी-बूटियों का इन्हें अच्छा ज्ञान है। दूर-दूर के गांवों से लोग इनके पास इलाज करवाने आते हैं। हड्डी जोड़ने के काम में ये खास तौर पर माहिर हैं।

खेती के विषय में बातचीत करने पर उन्होंने बताया कि वे पुरखों से धान की ही खेती करते आ रहे हैं। पानी की सुविधा न होने से दूसरी कोई फसल नहीं ले पाते हैं। राजू भाई अपने पुरखों से संभाले हुए देशी बीजों का ही प्रयोग करते हैं। इनके पास मुख्यत: तीन प्रकार के धान के बीज हैं जिनकी वे हर वर्ष खेती करते हैं। ये हैं आसनचूड़ी, सपरी और लुचई।

आसनचूड़ी की एक एकड़ में 7-8 क्विंटल उपज होती है। यह सफेद चावल है जिसका स्वाद काफी अच्छा है। इस क्षेत्र में अधिकांशत: यही खाया जाता है।

सपरी भी सफेद चावल है परंतु आसनचूड़ी से थोड़ा मोटा। इसकी भी उपज 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

लुचई बासा भोग की तरह छोटा चावल है परंतु इसमें खुशबू नहीं होती। इसकी उपज भी तकरीबन 9 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

खेती में कोई विशेष खर्चा नहीं होता - बीज अपने हैं, बैल अपने हैं। सिर्फ एक बार निंदाई करनी पड़ती है। मज़दूरों को, विशेषत: महिलाओं को मज़दूरी के बतौर पिछले वर्ष का बचा 3 किलो धान दिया जाता है। खेती में गोबर खाद का प्रयोग किया जाता है। पहले वर्ष एक एकड़ में 6 बैलगाड़ी खाद डालते हैं। दूसरे और